आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 23/06/2026; Published: 28/06/2026

लेख

अक्षरों की दुनिया का अनावरण और युवाओं के नाम संदेश

मैसूर साहित्य महोत्सव-2026

डॉ. पूर्णिमा उमेश

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,

सेंट फिलोमेनास कॉलेज (स्वायत्त),मैसूर

डॉ. पूर्णिमा उमेश, अक्षरों की दुनिया का अनावरण और युवाओं के नाम संदेश, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(293 -295)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21444051

मैसूर साहित्य महोत्सव का 10वां संस्करण, जो 4 और 5 जुलाई 2026 को होटल सदर्न स्टार में आयोजित हुआ, साहित्य प्रेमियों के लिए एक अत्यंत सुखद अनुभव रहा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन एच.एच. श्रीमती डॉ. प्रमोदा देवी वाडियार ने किया। पुस्तकों की प्रदर्शनी और साहित्यिक चर्चाओं के माध्यम से इस महोत्सव ने मैसूर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को एक नई ऊँचाई दी।

मेरा सत्र: "शब्दों के पार: कविता और जीवन का रिश्ता"

मैसूर साहित्य महोत्सव में पहली बार हिंदी सत्र को शामिल किया गया, जो मेरे लिए विशेष रूप से गर्व का विषय था। मैंने डॉ. द्वारिका उनियाल के साथ "शब्दों के पार: कविता और जीवन का रिश्ता" विषय पर सत्र का संचालन किया।

इस सत्र के दौरान, मैंने सामान्य मनुष्य के दैनिक जीवन के संघर्षों, उनकी अनकही पीड़ाओं और उन संघर्षों के प्रति समाज की उदासीनता पर गहराई से प्रकाश डाला। मैंने इस बात पर जोर दिया कि साहित्य केवल कागजों पर अंकित शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का दर्पण है। आज के दौर में, जब मानवीय संवेदनाएं धुंधली हो रही हैं, कविता एक सशक्त माध्यम है जो हमें हमारी जड़ों, हमारी 'आंचलिकता' (Regionality) और मानवता की ओर वापस ले जा सकती है।

अक्सर आज के पाठक किसी किताब को उसकी आकर्षक बाइंडिंग या रंग-बिरंगे कवर को देखकर खरीदते हैं। मैंने अपने सत्र में इस प्रवृत्ति पर गहरी चिंता व्यक्त की और यह आग्रह किया कि हमें पुस्तकों का चयन केवल उनके 'बाहरी आवरण' के आधार पर नहीं करना चाहिए। हमें एक ऐसी 'कृतज्ञता भरी संस्कृति' विकसित करनी होगी, जहाँ हम लेखक के नाम, उनकी वैचारिक गहराई और उस कृति के मूल दर्शन को समझें। कविता हमें जीवन की जटिलताओं को सुलझाने का साहस देती है और जब हम उन शब्दों के पार जाकर जीवन को देखते हैं, तभी हम एक बेहतर इंसान बन पाते हैं। मेरा उद्देश्य युवाओं को यह समझाना था कि कविता केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक दर्शन है।

मैसूर साहित्य महोत्सव पर मेरा दृष्टिकोण:

मेरे दृष्टिकोण से, यह महोत्सव केवल एक आयोजन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ 100 से अधिक लेखक और विचारक एक साथ जुटते हैं। यह संवाद और वैचारिक आदान-प्रदान के लिए एक दुर्लभ अवसर है। आज के डिजिटल युग में, जहाँ लोग फिल्म अभिनेताओं के पीछे भागते हैं, लेखकों की पहचान धुंधली होती जा रही है। यह आयोजन उस दूरी को मिटाने का एक सफल प्रयास है।

युवाओं और शिक्षण संस्थानों के लिए एक अपील:

आज की युवा पीढ़ी किताबों से दूर होती जा रही है, जो कि भविष्य के लिए चिंताजनक है। समय की मांग है कि हम इस स्थिति को बदलें। मैं अभिभावकों और शिक्षकों से आग्रह करती हूँ कि वे स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए ऐसे साहित्य उत्सवों में जाना अनिवार्य करें।

शिक्षण संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र ऐसे सत्रों में न केवल भाग लें, बल्कि उन पर असाइनमेंट या विस्तृत रिपोर्ट भी तैयार करें। जैसा कि कहा गया है-

"बिना पढ़े सत्य को नहीं जाना जा सकता"

इसलिए यह अनिवार्य है कि युवा पीढ़ी किताबों की दुनिया को फिर से खोजे। यह साहित्य महोत्सव हमारी बौद्धिक भूख को मिटाने का एक केंद्र है। यदि हम अपने बच्चों और छात्रों को किताबों के साथ बड़ा होने का अवसर देंगे, तभी हम एक जागरूक समाज का निर्माण कर पाएंगे। यह आज की हमारी सबसे बड़ी और अनिवार्य आवश्यकता है।

****